साहित्योत्सव
9-14 मार्च 2015
साहित्य अकादेमी
दैनिक समाचार बुलेटिन
रविवार, 15 मार्च 2015

राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र तथा राष्ट्र विषयक संगोष्ठी

14 मार्च 2015। 9 मार्च 2015 से शुरू हुए साहित्योत्सव का आज अंतिम दिन था और 'भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र तथा राष्ट्र' विषय पर आयोजित संगोष्ठी का तीसरा दिन। आज सुबह आयोजित सातवें सत्र का विषय था 'भारतीय कथा साहित्य में महिलाएँ तथा राष्ट्र'। इसकी अध्यक्षता डॉ. रुक्मिणी भाया नायर ने की, जिसमें तीन विदुषियों -- सुश्री वोल्गा, डॉ. लीना चंदोरकर और डॉ. अनामिका ने क्रमशः 'एक स्वतंत्र राष्ट्र में दलितों का जीवित यथार्थ : *स्वराज्यम* उपन्यास पर कुछ विचार, 'गौरी देशपांडे के कथा साहित्य में स्त्री प्रश्न' और 'उपन्यास के चित्रपट पर स्त्री को बुनते हुए : हाल के तीन नवीनतम उपन्यासों में राष्ट्र की स्त्रीवादी अवधारणा' पर अपने आलेख पढ़े। डॉ. रुक्मिणी भाया नायर ने अपनी टिप्पणी में स्त्री और राष्ट्र विषय पर संगोष्ठी में एक सत्र रखने पर अकादेमी को बधाई देते हुए कहा कि इसके प्रयासों से देशभर में महिला रचनाकार पहले से अधिक दिखाई पड़ रही हैं। उन्होंने कहा कि साहित्य में क्षेत्र, राष्ट्र और स्त्री का चित्रण नया नहीं है और इसे हम रवीन्द्रनाथ ठाकुर के आरंभिक लेखन में देख सकते हैं। डॉ. नायर ने मस्तिष्क और सेक्सुएलिटी, विमर्श में 'दूसरेपन' के प्रश्न और साहित्य में स्त्रीवादी लेखन के स्थान के बारे में अपने विचार व्यक्त किए।

वोल्गा ने अपनी बात *स्वराज्यम* उपन्यास को केंद्र में रखकर की और स्वतंत्रता प्राप्ति के आरंभिक वर्षों में राष्ट्र निर्माण में राज्य की सामंती संस्कृति और राजसत्ता के मध्य गठबंधन के बारे में चर्चा की। उनका मानना था कि यह गठबंधन पूँजीवादी पितृसत्ताक और सांप्रदायिक शक्तियों द्वारा और शक्तिशाली हुआ है ताकि दलितों, स्त्रियों, अल्पसंख्यकों और देसी तथा भाषाई समुदायों को दबाया जा सके। डॉ. लीना चंदोरकर ने गौरी देशपांडे के स्त्रीवादी उपन्यासों के बारे में बात करते हुए मराठी कथा जगत के आरंभिक स्त्रीवादी लेखिकाओं के विभ्रम की चर्चा की और कहा कि वह गौरी देशपांडे थीं जिन्होंने स्त्री-पुरुष संबंधों पर खुली चर्चा के लिए द्वार खोले और दूसरे लेखकों को प्रेरित किया कि वे मराठी कथा साहित्य में विभिन्न स्त्रीवादी मुद्दे उठाएँ। डॉ. अनामिका ने लेखन में स्त्री मुद्दे को उठाते समय लेखकों के समक्ष आनेवाली चुनौतियों और समस्याओं के बारे में बताया। उन्होंने हिंदी, उर्दू

और दूसरी भाषाओं के कथा साहित्य में इस अवरोध को तोड़ पाने में स्त्रीवादी लेखकों की अक्षमता की भी चर्चा की।

आठवें सत्र का विषय था 'भारतीय कथा साहित्य में दलित तथा राष्ट्र'। इसकी अध्यक्षता पी. शिवकामी ने की। इस सत्र में सुश्री माया पंडित, डॉ. रमणिका गुप्ता और हरीश नारंग ने क्रमशः 'नीचे की ओर से राष्ट्र : अन्नाभाऊ साठे और राष्ट्र तथा क्षेत्र का निर्माण', 'भारतीय कथा साहित्य में दलित' और 'दलित साहित्य में क्षेत्र और राष्ट्र का विचार' विषयक आलेख पढ़े। सुश्री शिवकामी ने बताया कि कैसे आरंभिक कथा साहित्य में साहित्यिक लेखन और विमर्श प्रायः राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हो रहे थे। उनका कहना था कि स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ समय बाद तक साहित्य मूलतः राष्ट्रवाद को ही केंद्र में रख रहा था। इसका कारण यह था कि राज्य की संस्थाएँ और देशभर के दूसरे संस्थान इस तरह से आकल्पित किए गए थे कि वे राष्ट्रवाद को बढ़ा सकें। राष्ट्रवाद को क्षेत्रवाद के ऊपर प्राथमिकता मिलने का दूसरा कारण यह था कि विस्तारित क्षेत्रवाद का मूल विचार ही राष्ट्र की अवधारणा के परिप्रेक्ष्य में असंगत था, हालाँकि राष्ट्र की मूल अवधारणा क्षेत्र के आधार पर निर्मित हुई है। इस परिदृश्य में यही हो सकता था कि दलित–क्षेत्रीय निर्मितियों और साहित्य की अपेक्षा उपक्षेत्रीय निर्मितियों तथा साहित्य के साथ पहचाने जाएँ।

नवें सत्र का विषय था -- 'पूर्वोत्तर भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र तथा राष्ट्र'। इसकी अध्यक्षता प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी ने की और इसमें डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय, डॉ. उदयनारायण सिंह और महेन्द्र पी. लामा ने क्रमशः 'भारतीय कथा साहित्य : बाङ्ला में क्षेत्र और राष्ट्र' 'दुखियार कुथी में अमियभूषण का साहित्यिक भूदृश्य' और 'भारतीय नेपाली साहित्य में क्षेत्र और राष्ट्र : तंतुओं, उपकरणों और संस्थाओं को जोड़ते हुए' शीर्षक अपने आलेख पढ़े।

दसवाँ और अंतिम सत्र 'क्षेत्र, राष्ट्र की प्रत्यालोचना तथा भारतीय कथा साहित्य' विषय पर था। इसकी अध्यक्षता प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी ने की और इसमें तीन जाने-माने विद्वानों -- डॉ. सिराज अहमद, डॉ. ए.जे. थॉमस और डॉ. अवधेश कुमार सिंह ने क्रमशः 'नगरों के माध्यम से क्षेत्र और राष्ट्र का अपवर्तन–अंग्रेज़ी में भारतीय कथा साहित्य को पुनर्परिभाषित करते हुए', 'समकालीन मलयाळम् कहानी में प्रतिबिंबित केरल में प्रवासी मजदूरों का जीवन' और 'लघु रूप देने के विरोध में : 'क्षेत्र और राष्ट्र संज्ञानात्मक श्रेणियों के रूप में तथा भारतीय उपन्यास' विषयक आलेख पढ़े।

आज की संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों का संयोजन-संचालन अकादेमी की उपसचिव श्रीमती रेणुमोहन भान ने किया।

संगोष्ठी का समाहार करते हुए डॉ. के. श्रीनिवासराव ने देशभर से इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेने के लिए आए सभी लेखकों और विद्वानों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया और कहा कि उनकी सहभागिता से ही यह संगोष्ठी इतनी सफल हुई। उन्होंने संगोष्ठी में दिए गए महत्त्वपूर्ण व्याख्यानों की चर्चा की, और आशा व्यक्त की संगोष्ठी में आमंत्रित युवा और प्रतिभाशाली विद्वानों और लेखकों ने इस अवसर का पूरा लाभ उठाया होगा और बहुत कुछ सीखा भी होगा। उन्होंने कहा कि संगोष्ठी के दौरान जो भी महत्त्वपूर्ण और रुचिकर मुद्दे उठाए गए -- उन पर अकादेमी गंभीरता से विचार करेगी और उन बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए देशभर में साहित्यिक आयोजन करेगी।

बच्चों की रचनात्मक प्रतिभा के प्रदर्शन के साथ संपन्न हुआ बाल साहिती कार्यक्रम

साहित्य अकादेमी के वार्षिक साहित्यिक आयोजन साहित्योत्सव 2015 का छठा एवं अंतिम दिन बच्चों की लेखकीय एवं रचनात्मक प्रतिभा को उभारने के लिए समर्पित रहा। 'बाल साहिती' शीर्षक के अंतर्गत आयोजित हुए इस कार्यक्रम में बच्चों की किताबों के विमोचन से लेकर बच्चों के लिए कविता लेखन प्रतियोगिता, चित्र प्रतियोगिता सहित अन्यथा सक्षम बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा प्रख्यात बाल साहित्यकारों द्वारा कहानी-वाचन कार्यक्रम हुए।

कार्यक्रम का प्रारंभ प्रख्यात जापानी बाल साहित्यकार ताजिमा शिन्जी की दो अंग्रेज़ी पुस्तकों *गौड़ीज़ ओशन* तथा *लीजेंड ऑफ़ प्लैनेट सरप्राइज़* के विमोचन से हुआ। ताजिमा शिन्जी शांतिनिकेतन में भी रह चुके हैं और साहित्य अकादेमी से उनकी इन पुस्तकों के दूसरी भाषाओं के भी संस्करण प्रकाशित हुए हैं। ताजिमा शिन्जी की पुस्तक *गौड़ीज़ ओशन* प्रशांत महासागर में प्रदूषण के कारण मर रहे जलप्राणियों के बारे में है। उन्होंने पर्यावरण के प्रति अनदेखी पर चिंता व्यक्त करते हुए इस पुस्तक के कुछ अंश भी पढ़े।

इससे पहले कार्यक्रम में सभी उपस्थित लोगों का स्वागत करते हुए अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि बच्चे किसी भी देश के लिए सबसे बड़े संसाधन होते हैं और उनका मानसिक व शारीरिक विकास राष्ट्र की पूँजी है। अतः उन्हें अच्छा साहित्य उपलब्ध कराने के लिए अकादेमी 24 भारतीय भाषाओं में बाल साहित्य प्रकाशित कर रही है। उन्होंने कहा हम अपनी गतिविधियाँ केवल शहरों तक ही सीमित नहीं रखना चाहते हैं, बल्कि गाँव-गाँव तक पहुँचाना चाहते हैं। उन्होंने बच्चों को अपना संदेश देते हुए कहा, 'आप अकेले नहीं हैं। आप बहादुर बनें और आगे बढ़कर अपने फ़ैसले लें।'

इस अवसर पर नई दिल्ली महानगर पालिका की शिक्षा निदेशिका विदुषी ने कहा कि बच्चों के लिए अच्छे साहित्य की बेहद कमी है। हमें 'पंचतंत्र' और 'एलिस इन वंडरलैंड' की कथाओं से बाहर निकल कर बच्चों को वर्तमान समय का कुछ नया और बेहतर साहित्य देना होगा। उन्होंने बाल साहित्य के बँधे-बँधाए ढर्रे पर होने और इसमें लैंगिक चेतना न होने पर भी चिंता प्रकट की। उन्होंने बच्चों के ज़्यादा टी.वी. देखने तथा घर के बाहर निकल कर न खेलने और लोगों से न मिलने पर चिंता प्रकट करते हुए कहा कि हमें बच्चों को स्कूली किताबों के बोझ से मुक्त कर कुछ रचनात्मक करने के लिए प्रेरणा देने वाला साहित्य रचना होगा। उन्होंने विद्यालयों में बच्चों के साथ हो रहे भेदभाव पर भी चिंता प्रकट की। इस अवसर पर राकेश श्रीवास्तव ने भी अपने विचार प्रकट किए।

शाम को हुई परिचर्चा 'नवयुवाओं के लिए पुस्तक लेखन' विषय पर केंद्रित थी, जिसमें लेखन प्रकाशन से जुड़े व्यक्तियों को आमंत्रित किया गया था। परिचर्चा में निवेदिता सेनगुप्त, मानसी सुब्रह्मण्यम, प्रियंवदा भट्टाचार्य, मनीषा चौधुरी और मानसरंजन महापात्र ने हिस्सा लिया। परिचर्चा के सूत्रधार प्रणव कुमार सिंह थे। वक्ताओं ने एकमत से यह स्वीकार किया कि 16 से 18 वर्ष के आयुवर्ग के बच्चों को नवयुवा की श्रेणी

बच्चों की उत्साहपूर्ण भागीदारी

में रखा जाना चाहिए। वक्तव्यों से यह बात भी उभरकर सामने आई कि इस आयुवर्ग के बच्चों के लिए अंग्रेज़ी में तो कुछ साहित्य प्रकाशित भी हो रहा है, लेकिन भारतीय भाषाओं में अनुकूल साहित्य नहीं के बराबर है। अभी हम पश्चिम से आयातित साहित्य ही छाप रहे हैं। भारतीय नवयुवाओं के लिए उनके परिवेश को ध्यान में रखते हुए विशेष रूप से लेखन और प्रकाशन की ज़रूरत है। कार्यक्रम का संयोजन अकादेमी की उपसचिव गीतांजलि चटर्जी ने किया।

'बाल साहिती' का विशेष आकर्षण आँचल स्पेशल स्कूल, चाणक्यपुरी के अन्यथा सक्षम बच्चों द्वारा की गई नृत्य प्रस्तुतियाँ थीं, जिनका निर्देशन कुमारी पूर्णिमा शर्मा और राकेश श्रीवास्तव द्वारा किया गया था। इन बच्चों द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना, बरसाने की होली, 'जय हो' एवं 'देश रंगीला' गीतों तथा राधा-कृष्ण के रास पर आधारित नृत्यों को काफी पसंद किया गया। नृत्य प्रस्तुतियों के दौरान कार्यक्रम का संचालन मधु शर्मा द्वारा किया गया।

बच्चों के लिए कविता प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें बच्चों ने 'स्वच्छ भारत' विषय पर कविताएँ लिखीं। इसमें 12 वर्ष से कम आयु के वर्ग में अनन्या गुप्ता को प्रथम पुरस्कार, अभय को द्वितीय तथा दो सांत्वना पुरस्कार क्रमशः कान्हा त्रेहन और पावनी को दिए गए। 12 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में विदुषी जैन को प्रथम, गौरव पति को द्वितीय और उमेश कुमार को तृतीय पुरस्कार दिया गया। सांत्वना पुरस्कार काशीराम और ओशीन को दिए गए। प्रतियोगिता की निर्णायक थीं—क्षमा शर्मा और दीपा अग्रवाल। पुरस्कार वितरण अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवास राव द्वारा किया गया।

कहानी पाठ कार्यक्रम के अंतर्गत मधु पंत और देवेन्द्र मेवाड़ी ने बहुत ही रोचक ढंग से हिंदी में अपनी कहानियाँ सुनाईं, जबकि रॉबिंसन ने अभिनय के साथ अपनी अंग्रेज़ी कहानी सुनाई। इसके बाद 'बच्चों की पुस्तकों के लिए चित्रकारी' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसका संयोजन देवव्रत सरकार द्वारा किया गया। इसके अंतर्गत बच्चों को विभिन्न पाठ दिए गए और उनसे उन पाठों के आधार पर चित्र बनाने को कहा गया। इसमें बड़ी संख्या में बच्चों ने भाग लिया और बहुत सुंदर चित्र बनाए।

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110001
दूरभाष : +91 11 23386626-28, फ़ैक्स : +91 11 23382428
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in, वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in

DD NATIONAL Media Partner